International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 07-01-2019; Accepted: 10-02-2019
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 2; March 2019; Page No. 09-12

कथाकार अमरकांत का व्यक्तित्व, एक संक्षिप्त परिचय

रीता माहेश्वरी
(शोधार्थी), डॉ. शशि जोशी, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश
साहित्य की रचना एक अत्यंत चुनौतीपूर्ण कार्य है। साहित्य समाज का प्रतिबिम्ब होता है। कुछ प्रबुद्ध साहित्यकार समुद्र में से सिप एवं मोती निकालते है जो साहित्यकार मोती ढूंढकर लाते है वे साहित्य के आकाश में चमकते दिखाई देते है। अपनी प्रखर दृष्टि, संवदेनशीलता एवं पैनी नजर के कारण अमरकांत ने न केवल समस्याओं की तरफ ध्यान दिया बल्कि उनके उपाय भी सुझाए। उनका साहित्य निष्पक्ष तथ्यों पर आधारित होता था। अमरकांत का साहित्य लेखन उनके जीवन से पृथक नहीं है। उनकी भावात्मकता, गहन विचार शक्ति एवं उत्कृष्ट चिन्तन ने उन्हें एक अद्वितीय साहित्यकार बनाया। मध्यम वर्गीय जीवन के पक्षों का सूक्ष्म विश्लेषण ही उनके रचना संसार का आधार है। उनकी रचनाधर्मिता ने समाज के सामने मध्यम वर्गीय जनमानस की दशा का वास्तविक बिम्ब प्रस्तुत किया। उनकी साहित्य रचना केवल यथार्थ एवं वस्तुस्थिति का ही चित्रण नहीं करती अपितु समय—समय पर हमें सोचने पर मजबूर भी करती है। कभी—कभी हमारे सामने प्रश्नचिन्ह लगाती है।

मूल शब्द: कहानीकार, अमरकांत, जीवनवृत्त, व्यक्तित्व, प्रारम्भिक परिवेश, शिक्षा एवं संस्कार तथा पारिवारिक पृष्ठभूमि।

प्रस्तावना
कहानीकार कहानी में प्रमुख रूप से व्यक्तित्व एवं रचनाशक्ति का परिचय भाषा के माध्यम से देता है। कहानी मानव जीवन की विषयवस्तु पर आधारित होती है जिसमें मानवीय संवेदना, सामाजिक एवं नैतिक मूल्य, देशकाल, समाज एवं परिस्थितियों का यथार्थ चित्रण होता है। साहित्यकार अपनी रचनाओं में अपने भावों को उसी तरह समाहित करता है जिस प्रकार फूल की सुगन्ध पंखुड़ियों में होती है। एक अद्‌भुत साम्य वाले व्यक्तित्व है अमरकांत। साहित्य की कल्पनाओं को मूर्त रूप देनें एवं मानवीय संवेदना को पाठक के मानस पटल पर चित्रित करने वाले प्रख्यात साहित्यकार है अमरकांत।

व्यक्तित्व
अमरकांत के जीवन का प्रमुख लक्ष्य साहित्य सृजन ही रहा है। उनका जीवन आत्यंतिक व्रत का स्वरूप है। उनके जीवन का अवलोकन करने पर विदित होता है कि समय के साथ आए उतार—चढ़ाव, आर्थिक स्थिति, पारिवारिक जिम्मेदारी एवं स्वास्थ्य सम्बंधी समस्याएँ होने पर भी उनकी रचनाधर्मिता कभी कुण्ठित एवं शिथिल नही हुई। अमरकांत सदैव एक लेखक से पूर्ण निष्ठा, ईमानदारी एवं समर्पण की आशा करते थे। राजनीतिक रूझाान और पेशेवर पत्रिका में आजीवन लिप्त रहते हुए भी अमरकांत ने लेखन के क्षेत्र में अद्वितीय एवं सराहनीय योगदान दिया।
अमरकांत के व्यक्तित्व का निम्न बिन्दूओं द्वारा निरूपण किया जा सकता है:—
१. प्रारम्भिक परिवेश
२. शिक्षा एवं संस्कार
३. पारिवारिक पृष्ठभूमि

१. प्रारम्भिक परिवेश
अमरकांत का जन्म ०१ जुलाई १९२५ को आषाढ़ के बरसाती दिनों में उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के भगमलपुर गाँव, तहसील रसडा में हुआ। भगमलपुर गाँव तीन टोलों में बटाँ हुआ था, उत्तर दिशा की तरफ यादवों का टोला था, दक्षिण में दलितों का और मध्य में तीन कायस्थ परिवार थे। इन्हीं कायस्थ परिवारों में एक परिवार अमरकांत का था। अमरकांत के पूर्वज जोनपूर के किसी नवाब के सिपहसालार थे लकिन किन कारणों से उन्हें भगमलपुर में निवास करना यह ज्ञात नहीं है। पैतृक निवास कच्चा होने पर भी काफी बड़ा था। जिसमें दो आँगन थे एवं उनके मकान के सामने एक कदम्ब का वृक्ष था। घर में किसी भी प्रकार की न्यूनता नहीं थी। पारिवारिक सुविधाएँ जुटाने में यह परिवार सक्षम था। अमरकांत के गाँव के घरेलू नौकर थे ढेलू बाबा जो उन्हें स्कूल छोड़नें भी जाते और लेने भी। ढेलू बाबा धोती पहनते थे जो घुटने के ऊपर होती थी। यदा—कदा वे अमरकांत को कंधे पर भी बैठा लेते थे। दूसरों के दुःख को अमरकांत सहन नही कर पाते थे, आपसी मन—मुटाव उन्हे बहुत अधिक कष्ट देता था। उनका भावूक स्वभाव इस बात से भी सिद्ध होता है कि दरवाजे पर जब भी दरिद्र, अपाहिज एवं बेसहारा आकर गिड़गिड़ाते थे तो वे उदास हो जाते थे। किसी दावत समारोह में कूड़े में फेंकी गई झूठी पत्तलों के लिए मेहतर जब आपस में लड़ते तो यह दृश्य उन्हें अवसाद देता था।[१] दादी माँ से लोकगीत एवं कहानियाँ सुनने का उन्हें बहुत शौक था परन्तु अमरकांत के घर में कोई विशेष साहित्यिक वातावरण नहीं था।
अमरकांत बचपन में दोहरा व्यवहार करते थे। घर के भीतर अलग और बाहर अलग, घर के बाहर वे शर्मिले और चुप्पी साधने वाले बालक थे एवं घर के अन्दर उन्हें छोटे भाईयों की नाक पकड़कर लाल करने में बहुत मजा आता था। अमरकांत का बाल्यकाल में लड़कियों के साथ खेलना बहुत पसन्द था, पर कभी—कभी वे उदास हो जाते थे जब लड़कियाँ उन्हें चिढ़ाकर भगा देती थी। खेलों में उन्हें हॉकी, फूटबाल, गिल्ली—डण्डा, कबड्डी आदि से बेहद लगाव था।[२] अमरकांत का स्वभाव सरलता, विनोदी, शरारती, संकोची, भावुकता एवं संवेदनशीलता का सम्मिश्रण था और इसी विशिष्टता ने उन्हे साहित्य सृजन की ओर प्रेरित किया। बचपन में ही उन्होनें मध्यम एवं निम्न वर्ग को बड़ी नजदीकियों से देखा और

समझा। उनके मनोभाव गरीब एवं दु:खीजन के प्रति सहानुभूति एवं उदारता के थे। कभी—कभी वे बुजुर्गो के कार्य स्वत: ही आर्शीवाद के लिए कर देते थे। अमरकांत का बड़ा होना समाजवाद, स्वतन्त्रता और आर्थिक स्वतन्त्रता के साथ हुआ है।

बचपन से दूसरों के दु:ख में भागीदार बनने का स्वभाव अमरकांत में था। अमरकांत का हृदय द्रवित हो जाता था जब वे गरीब वर्ग को आपस में भोजन के लिए संघर्ष करते देखते थे, यही पीड़ा आगे चलकर उनकी कहानियों का आधार बनी। हिन्दी के यशस्वी साहित्यकार एवं कथा सम्राट मुन्शी प्रेमचन्द की परम्परा के रचनाकार अमरकांत का देहान्त १७ फरवरी २०१४ को प्रात: १० बजे अपने आवास "पंचपुष्प अपार्टमेंट" जो अशोक नगर, इलाहाबाद में स्थित है में हुआ। स्नान के समय फिसलने के कारण उनकी साँसें रूक गई। वह ८८ वर्ष के थे। उनके पार्थिव शरीर का अंतिम संस्कार दिनांक १८ फरवरी को रसूलाबाद घाट पर विद्युत शवदाह गृह में किया गया।[३] दोपहर दो बजे के समय उन्हे "गॉड ऑफ ऑनर" के साथ विदाई दी गई। अमरकांत दूसरे ऐसे कथाकार है जिन्हें 'सैन्य सम्मान' मिला। इससे पूर्व फिराक गोरखपुरी के निधन पर उन्हें यह सम्मान दिया गया था। वह अपने पीछे एक भरा—पूरा परिवार छोड़कर गए है। शरीर नश्वर है, आत्मा चिरंतन है परन्तु उनकी मानवीय संवेदना उनके साहित्य से हमेंशा परिलक्षित होती रहेंगी।

अमरकांत का निधन साहित्य, कला एवं संस्कृति से सम्बद्ध लोगों को स्तब्ध करने वाला है। अमरकांत का निधन हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में एक अपूरणीय क्षति का दिन था। अमरकांत हिन्दी साहित्य के भावों और विचारो के प्रति गहरी निष्ठा के लिए हमेशा यादगार एवं प्रासंगिक रहेंगे। असगर वजाहत ने लिखा है— "अमरकांत अपनी पीढ़ी के एक ऐसे कहानीकार थे, जिनसे उस समय के युवा कहानीकारों ने बहुत सीखा। वो कहानीकारों में इस रूप में विशेष माने जाएंगे कि एक पूरी पीढ़ी को उन्होंने सिखाया बताया।"[४]

२. शिक्षा एवं संस्कार

अमरकांत की शिक्षा का प्रारम्भ नगरा के प्राथमिक विद्यालय से हुआ। नगरा के स्कूल का भवन छोटा परन्तु पक्का बना हुआ था। यहाँ के हेडमास्टर मौलवी थे, उनकी प्रवृत्ति हमेंशा हाथ में छड़ी लेकर घुमने की थी। कुछ समय बाद परिवार नगरा छोड़कर बलिया शहर आ गया एवं बाद का शिक्षण उन्होनें अपने पिता के समीप रहकर बलिया शहर से पूर्ण किया।[५] उस समय आर्य समाज का प्रभाव बलिया शहर पर था। पहले उनका दाखिला तहसीली मिडिल स्कूल तत्पश्चात् कक्षा ३ से शासकीय हाई स्कूल में किया गया। तीसरी कक्षा में प्रवेश सन् १९३३ के जुलाई माह में प्रवेश परीक्षा के पश्चात् हुआ। उस समय उनके प्रधानाध्यापक महावीर प्रसाद जी थे। अमरकांत को घर पर पढ़ाने एक जीर्णकाया वाले पण्डितजी आते थे, वे मारपीट और लंठई के अनुभव को पढ़ाई से अधिक महत्व देते थे। आर्य समाज के पदाधिकारी बाबू जानकी प्रसाद के कारण वहाँ पर एक 'चलता पुस्तकालय' स्थापित किया गया। जिसका लाभ अमरकांत को आगे चलकर उनके लेखन हेतु मिला। अमरकांत सन् १९३८ से १९३९ में कक्षा आठ में अध्ययन करते थे, इसी समय उन्हें हिन्दी के एक विद्वान बाबू गणेश प्रसाद से विद्या अर्जन करने का अवसर मिला। वे साहित्य के अच्छे ज्ञाता थे। कभी—कभी वे बच्चों को निबन्ध के स्थान पर कहानी लेखन के लिए भी कहते थे। वे बच्चों को हस्थलिखित पत्रिका निकालने पर भी बल दिया करते थे।[६]

जब अमरकांत ८वीं कक्षा में थे तब उन्होनें शरतचंद्र और मुंशी प्रेमचंद की रचनाओं एवं महाभारत का गहन अध्ययन किया, लेकिन सबसे गहरा प्रभाव शरतचंद्र की रचनाओं का पड़ा। उनकी आत्मा से आवाज आई कि मैं लिख सकता हूँ... ..... ठीक वैसा ही, उसी तरह।[७] प्रभावस्वरूप वे हर जगह, हर कार्यस्थल में अपनी कल्पना एक नायक के रूप में करने लगे। उनमें यह विश्वास जाग्रत हुआ की मैं भी शरतचंद्र की तरह उत्कृष्ट कहानियों का लेखन कर सकता हूँ। जब वह ९वीं कक्षा में थे तब उन्होनें काफी आत्मविश्वास से कहानी लेखन का कार्य शुरू किया एवं उनके मोहल्ले के एक मित्र के लिए कहानियाँ लिखी।

इंटरमिडिएट में प्रवेश के बाद उन्होनें लम्बी कहानियों का लेखन कार्य शुरू किया। प्रेम एवं करूणा, राजनीतिक, राष्ट्रीय आन्दोलन, गुलामी के प्रति द्वेष एवं आक्रोश इन सभी विषयों का प्रभाव उनकी रचनाओं पर पड़ा। उन्होनें उपरोक्त विषयों को ही अपनी लेखनी का मूल आधार बनाया।

उनकी शिक्षा का कुछ सफर गोरखपुर एवं इलाहाबाद इंटरमिडिएट स्कूल में भी रहा, परन्तु १९४२ के भारत छोड़ो आन्दोलन में शामिल होने की वजह से वे अपनी आगे की शिक्षा यहाँ पूरी न कर सकें। उन्होनें १९४६ में इंटरमिडिएट सतीशचंद्र कॉलेज बलिया से किया और इलाहाबाद विश्वविद्यालय से १९४७ में बी.ए. की शिक्षा पूरी की। यहाँ पर अमरकांत का शिक्षा ग्रहण करना खत्म हुआ और नौकरी करने का क्रम शुरू हुआ।

प्रयाग विश्वविद्यालय से बी.ए. की शिक्षा समाप्त करने पर उन्होनें नौकरी के लिए प्रयास करना शुरू किया। सरकारी नौकरी पाने के स्थान पर उन्होनें पत्रकारिता का क्षेत्र चुना। चुंकि वे साहित्य की सेवा को ही देश की सेवा का पर्याय मानते थे अत: उन्होनें हिन्दी साहित्य के लिए कार्य करने का दृढ़ निश्चय किया। अमरकांत में भावनात्मकता प्रधान थी, इसलिए उनमें राजनीतिक व्यवस्था देखकर निराशा उत्पन्न हुई। भ्रष्ट राजनीति के बीच कहानीकार अपने को हर क्षण दलदल में फँसा हुआ महसूस करता है। इसी दशा ने उन्हें पत्रकारिता की ओर झुकने पर बल दिया।

चूंकि अमरकांत के चाचा साधु शरण वर्मा आगरा में रहते थे, अत: उनके प्रयास द्वारा अमरकांत को "सैनिक" में नौकरी प्राप्त हुई एवं उन्होनें "सैनिक" के सम्पादकीय विभाग में कार्य करना शुरू किया।[८] "बाबू" नामक कहानी उनकी सन् १९४६ के "सैनिक" के एक विशेषांक में छपीं।[९] यही पर अमरकांत की भेंट विश्वनाथ भटेले से हुई जो अमरकांत के साथ ही कार्य करते थे। विश्वनाथ का साथ पाकर उन्होनें प्रगतिशील लेखक संघ की बैठक के आयोजन में जाना शुरू किया। यहाँ पर उन्हें अनेक साहित्यकार जैसे डॉ. राम विलास शर्मा, राजेन्द्र यादव, रवी राजेन्द्र एवं रघुवंश से विचार विमर्श का मौका मिला। अपनी पहली कहानी "इंटरव्यू" के लिए सराहना उन्हें इसी प्रगतिशील लेखक संघ से मिली।

अमरकांत का अधिकतर समय साहित्यवार्ता एवं मित्रों के बीच ही बितता था। सही अर्थो में उनका जीवन लापरवाह था। उन्हें किसी भी बात की परवाह नहीं थी। लेकिन उनके चाचा को उनका यह लापरवाह व्यवहार पसंद नहीं आया, उन्होनें सीताराम को अमरकांत को पुन: अपनें पास बुलाने का निवेदन किया। ३ वर्ष का समय व्यतीत करने के बाद वे इलाहाबाद आ गए। यहाँ आने के पश्चात् पुन: उन्होनें "अमृत पत्रिका" में नौकरी कर ली। यहाँ का वेतन अपर्याप्त था, अत: उन्होनें आर्थिक दबाव को महसूस किया। यहाँ पर प्रेस का बर्ताव भी उन्हें निराशाजनक लगा। आर्थिक विषमता एवं झगड़ों का सामना प्रेस में भी उन्हें करना पड़ा। इन सभी

कारणों के चलते सन् १९५४ में अमरकांत को हृदयाघात हुआ। उस समय वह लखनऊ में थे।[१०] तब उन्हें गहरे मानसिक द्वन्द का सामना करना पड़ा। इस अवसाद के समय ने उन्हें यह अनुभव कराया की जीवन का एक हिस्सा वे यूहीं बरबाद कर चूके है। अब वे किसी काम के नहीं है। इसी समय उन्होनें महसूस किया कि एक क्षण की बर्बादी भी जीवन की बर्बादी है। इस असमंजस परिस्थिति में उन्होनें लिखने के प्रण को अपना उद्देश्य निर्धारित किया। स्वास्थ्य के ठीक होने पर वे कनिष्ट भ्राता के यहाँ आजमगढ़ आ गए। वहाँ भूख की व्यथा एक पहाड़ी महिला से सुनकर उन्होंने "दोपहर का भोजन" कहानी लिखी जोकि सन् १९५५ के "कहानी विशेषांक" में प्रकाशित हुई।

३. पारिवारिक पृष्ठभूमि

अमरकांत का परिवार गाँव के गिने—चुने सम्पन्न परिवारों में से एक था। अमरकांत के पिता का नाम सीताराम वर्मा एवं माता का नाम अनंती देवी था। वह कार्यकुशल गृहिणी होने के साथ—साथ धर्मपरायण स्वभाव वाली एवं परिश्रमी महिला थी। अमरकांत की माता अत्यन्त सहज एवं सरल प्रवृत्ति की थी। माता का असमय निधन होने पर बच्चों की परवरिश पिता ने की। परिस्थितिवश कुछ समय बच्चों को ननिहाल में भी रहना पड़ा। सीताराम वर्मा ने दो विवाह किए थे, उनकी पहली पत्नी से उन्हे एक पुत्री जिसका नाम फूलमती था। कुछ वर्ष के बाद फूलमती का देहान्त हो गया। उनके पिता पुश्तैनी वकील थे। पिता ने इलाहाबाद में रहकर ही अपनी शिक्षा पूर्ण की। उन्होनें इंटरमिडिएट कायस्थ पाठशाला से पूर्ण किया। मुख्तारी की परीक्षा पास करने के उपरान्त उन्होनें बलिया की कचहरी में वकालत करना शुरू किया। पिताजी सनातन धर्म के प्रति श्रद्धा रखते थे किन्तु वे कर्मकाण्ड एवं धार्मिक रूढ़ियों के प्रति कट्टर थे। भगवान राम और शिव को वे अपने आराध्य के रूप में मानते थे। भाषाओं में उन्हें उर्दू एवं फारसी भाषा का भी ज्ञान था। हिन्दी भाषा पर उनकी पकड़ बहुत कम थी, इस पर केवल वे अपना सामान्य कार्य कर सकते थे।[११]

अमरकांत के पिता बहुत ही अच्छे गायक थे, इसी कारण अमरकांत को भी संगीत के प्रति रूचि थी। उन्हें शान—शौकत से रहना अत्यधिक पसंद था। अपनी युवावस्था में उन्होनें कुश्ती में महारत हासिल की। झूठ से वे नफरत करते थे, सत्य बोलने में उन्हें तनीक भी झिझक नही होती थी। वे सदैव शराब एवं जुअे के विरोधी रहे। उन्होनें अपने दायित्वों को बखूबी ढ़ंग से निभाया। वे आजीवन सक्रिय रहें। वे लगभग ८० वर्ष तक जीवित रहें। अमरकांत को पिता से बहुत सारी सीख विरासत में मिली थी।

अमरकांत को मिलाकर सात भाई एवं दो बहनें थी जिनमें अमरकांत सबसे बड़े थे। उनकी एक बहन गायत्री का स्वर्गवास बचपन में ही बिमारी के कारण हो गया था। बहन की बिमारी के बावजूद अमरकांत कभी—कभी चुपके से उन्हें अचार खाने को देते थे। बहन की दयनीय स्थिति को देखकर अमरकांत बार—बार रो दिया करते थे। गायत्री की अर्थी को अत्यन्त दु:खी मन से अमरकांत ने महावीरजी के चबूतरे के कमरे की चौखट पर बैठकर देखा। इसी छोटी उम्र में उन्होनें जन्म एवं मृत्यु के सत्य को समझनें का प्रयास किया। पिताजी ने सभी की पढ़ाई के प्रबन्धन की व्यवस्था अच्छे तरीके से की और वे यह चाहते थे की बच्चें जिम्मेदार बनकर अपने पैरों पर खड़े हो सकें। वे अपने बच्चों से केवल हाई स्कूल पास करने की उम्मीद करते थे जिसके पश्चात् वे उनका विवाह करवाकर जिम्मेदारियों से मुक्त होना चाहते थे। लड़कियों के बारे में उनका मत था कि जल्दी विवाह करना ही उनके लिए बेहतर होता है। अमरकांत के सभी भाई एवं बहन विवाहित है। दूसरे भाई राधेश्याम वर्मा बोर्ड ऑफ रेवेन्यु, लखनऊ में अधिकारी थे। तीसरे भाई शिवराम वर्मा कार्यकारी अभियन्ता के पद पर थे। चौथे भाई घनश्याम वर्मा का स्वभाव धार्मिक प्रवृत्ति का है। पाँचवें भाई बृजश्याम वर्मा डिप्टी कमिश्नर के पद पर कार्यरत थे। छठें भाई हरिश्याम वर्मा लखनऊ में ही पिता के अनुरूप पेशे से वकील है। सातवें भाई कुंजश्याम ने डिप्टी चीफ मेडिकल ऑफिसर के पद कार्य किया।[१२]

गोरखपुर की रहने वाली गिरिजा देवी से अमरकांत का विवाह १ मई १९४६ को हुआ। उनके दो पुत्र एवं दो पुत्री हुई। बड़ी पुत्री का बाल्यकाल में ही निधन हो गया। उनका ज्येष्ठ पुत्र जिसका नाम अरूण वर्धन है जो कि विशेष संवाददाता के रूप में "नवभारत टाइम्स, दिल्ली" के पद पर कार्यरत थे। इनकी पत्नी डॉ. कुमुद शर्मा दिल्ली विश्वविद्यालय में सेवारत है। जिनका अंतर्जातीय विवाह हुआ। उनकी द्वितीय संतान का नाम संध्या सिन्हा है जो विवाह उपरान्त अपने पति शिवशरण सिन्हा के साथ पटना में निवास करती है। उन्हे एक लड़का एवं एक लड़की है। अरविन्द कुमार वर्मा अमरकांत में कनिष्ठ पुत्र है जिनका विवाह रीता वर्मा के साथ हुआ एवं वह "अमर कृतित्व" के प्रकाशन का कार्य करते है।[१३] अमरकांत की पत्नी का देहावसान सन् २००१ में हो गया था।

निष्कर्ष

अमरकांत का हिन्दी साहित्य की अनवरत यात्रा में विशिष्ट स्थान है। कहानीकार अमरकांत ने हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में अपनी विलक्षण प्रतिभा से एक भिन्न पहचान बनाई। कहानीकार अमरकांत का जीवन व्यक्तित्व कठोर तप से सृजित कंचन से कुन्दन का रूप है। उनके कृतित्व में सामाजिक मूल्यों के प्रति निष्ठा, मानवीय संवेदना, सामाजिक चेतना एवं दायित्व के प्रति सजगता दृष्टिगत होती है। उनका साहित्य उनके संकल्पित मूल्यों एवं समर्पण का जीवन्त प्रमाण है। अमरकांत मुन्शी प्रेमचन्द की परम्पराओं के साहित्य सृजनकर्ता है जिनका स्थान उनकी पीढ़ी के रचनाकार में सर्वोत्तम है। मुन्शी प्रेमचन्द के अनुरूप ही जीवन के अन्तिम क्षणों तक अमरकांत ने अपना लेखन नहीं छोड़ा। ऐसा लगता है कि मुन्शी प्रेमचन्द अपनी कलम मृत्यु उपरान्त अमरकांत को सौप गए है। यशपाल उन्हें "गोर्की" से सम्बोधित करते थे। साहित्यकार अमरकांत वास्तव में हिन्दी साहित्य की आकाशगंगा में एक जाज्वल्यमान नक्षत्र थे जिनसे नए लेखक बहुत कुछ सीख सकते है और इस निराशावादी युग में आशा का संचरण कर सकते है।

सन्दर्भ सूची

१. अमरकांत एक मूल्यांकन, सं. रवीन्द्र कालिया, पृ.क्र.—११
२. कथाकार अमरकांत, सं. विजय कुमार वैराटे, पृ.क्र.—१८
३. हिन्दी साहित्य विमर्श, ०८/०३/२०१४ (नेट से साभार)
४. आदित्य चौधरी, सं. भारत कोष (नेट से साभार)
५. कथाकार अमरकांत, सं. विजय कुमार वैराटे, पृ.क्र.—१९
६. अमरकांत एक मूल्यांकन, सं. रवीन्द्र कालिया, पृ.क्र.—१५
७. अमरकांत संकलित कहानियाँ, नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, नई दिल्ली, २००८
८. अमरकांत की सम्पूर्ण कहानियाँ, १—२, अमर कृतित्व प्रकाशन, इलाहाबाद, १९९८
९. कथाकार अमरकांत, सं. विजय कुमार वैराटे, पृ.क्र.—२०
१०. अमरकांत एक मूल्यांकन, सं. रवीन्द्र कालिया, पृ.क्र. —३२

११. कथाकार अमरकांत, सं. विजय कुमार वैराटे, पृ.क्र.—१८
१२. कथाकार अमरकांत, सं. विजय कुमार वैराटे, पृ.क्र.—१९
१३. कथाकार अमरकांत, सं. विजय कुमार वैराटे, पृ.क्र.—२०